

(अव्यक्त इशारे) - कर्मयोगी बनो

- 1) कर्मयोगी अर्थात् हर कर्म योग - युक्त, युक्ति - युक्त, शक्ति- युक्त हो। सिर्फ बैठकर योग करने वाले नहीं। योगी जीवन है अर्थात् योग-युक्त हैं। कर्मयोगी किसी भी कर्म की तरफ आकर्षित नहीं होते, वह अपनी योगशक्ति से कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराते हैं। जो कर्म के वश होकर चलने वाले हैं उनको कर्मयोगी नहीं कह सकते।
- 2) कर्मयोगी कर्म के भोग भोगने में अच्छे व बुरे में कर्म के वशीभूत नहीं हो सकते। कर्मयोगी नाम सिद्ध करता है कि योगी हैं अर्थात् निराकारी आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर कर्म करने वाले हैं। जैसे कर्म के बिना एक सेकेण्ड भी रह नहीं सकते, वैसे ही याद अर्थात् योग के बिना भी एक सेकेण्ड रह नहीं सकते, इसलिए कर्म के साथ योगी नाम भी साथ-साथ ही है।
- 3) जैसे कर्म स्वतः ही चलते रहते हैं, कर्मेन्द्रियों को नेचुरल अभ्यास है। ऐसे ही बुद्धि को याद का नेचुरल अभ्यास होना चाहिए। इन कर्मेन्द्रियों का आदि - अनादि अपना-अपना कार्य है। हाथ को हिलाने व पाँव को चलाने में कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती, उसी प्रमाण ब्राह्मण जीवन का तथा इस संगमयुगी जीवन में बुद्धि का निजी कार्य व जन्म का कार्य है बाप को याद करना। जीवन का जो निजी कार्य होता है वह नेचुरल और सहज ही होता है। तो अपने को सहज कर्मयोगी अनुभव करो।
- 4) याद की विधि और धन की वृद्धि दोनों साथ-साथ हो तब कहेंगे कर्मयोगी। धन की वृद्धि के पीछे विधि को छोड़ नहीं देना। लौकिक स्थूल कर्म, कर्मयोगी की स्टेज में परिवर्तन करो। सिर्फ कर्म करने वाले नहीं लेकिन कर्मयोगी। ईश्वरीय सेवा में सदा निमित्त मात्र का मंत्र वा करनहार की स्मृति का संकल्प याद रहे, करावनहार भूले नहीं, यही कर्मयोगी स्टेज है, इससे सदा निर्माण ही निर्माण करते रहेंगे।
- 5) कर्म अर्थात् व्यवहार, योग अर्थात् परमार्थ। परमार्थ अर्थात् परमपिता की सेवा अर्थ। तो व्यवहार और परमार्थ दोनों साथ- साथ रहें इसको कहा जाता है श्रीमत पर चलने वाले कर्मयोगी। मैं सिर्फ व्यवहारी नहीं लेकिन व्यवहारी और परमार्थी अर्थात् जो कर रहा हूँ, वह ईश्वरीय सेवा अर्थ कर रहा हूँ। इस स्मृति से एक ही तन द्वारा एक ही समय मन और धन की डबल कमाई होती रहेगी।
- 6) जैसे निमित्त बनी हुई आत्माओं को कर्म करते हुए देखते हो कैसे हल्के बन, खुशी खुशी से कर्म करते हैं, इन्हों से सहज कर्मयोगी बनने की प्रेरणा मिलती है। कर्मयोगी बनने के लिए अपनी ऊंची स्थिति और असली स्थान को सदा स्मृति में रख कार्य करने अर्थ नीचे आओ, तो कितना भी कार्य करते कर्मयोगी रहेंगे।
- 7) अभी सहज और सदा के कर्मयोगी अर्थात् निरन्तर निर्विकल्प समाधि में रहने वाले सहज योगी बनो। जो सदा कर्मयोगी रहते हैं वह सदाचारी रहते हैं। जैसे धर्म और कर्म, दोनों को अलग नहीं कर सकते। कोई भी कर्म करते हुए धर्म अर्थात् धारणा भी सम्पूर्ण हो। कर्म में जब बहुत बिजी रहते हो, तब धारणा भी इतनी रहे। दोनों तराजू का तरफ एक समान रहे, तब कहेंगे श्रेष्ठ वा दिव्य बुद्धिवान, कर्मयोगी आत्मा।
- 8) जैसे कला दिखाने वाले कलाबाज वा सर्कस में काम करने वाले हर कर्म करते हुए, हर कर्म में अपनी कलाबाजी दिखाते हैं। उन्हों का हर कर्म कला बन जाता है। ऐसे आप श्रेष्ठ आत्मायें,

कर्मयोगी, निरंतर योगी, सहजयोगी, राजयोगी हर कर्म को न्यारे और प्यारे रहने की कला में रहकर करो। आपके अलौकिक कर्म की कला को देखने के लिए सारे विश्व की आत्मायें इच्छुक बनकर आयेंगी।

- 9) आप सबको बाप द्वारा शुद्ध प्रवृत्ति मिली हुई है, बुद्धि की प्रवृत्ति है शुद्ध संकल्प करना, वाणी की प्रवृत्ति है जो बाप द्वारा सुना वह सुनाना, कर्म की प्रवृत्ति है कर्मयोगी बन हर कर्म करना, कमल समान न्यारा और प्यारा बन रहना, हर कर्म द्वारा बाप के श्रेष्ठ कार्यों को प्रत्यक्ष करना, हर कर्म चरित्र रूप से करना। चतुराई नहीं लेकिन चरित्र, वह भी दिव्य चरित्र हो तब कहेंगे कर्मयोगी।
- 10) योग माना ही याद का अटेंशन, जैसे कर्म नहीं छोड़ सकते वैसे याद भी न छूटे, इसको कहा जाता है कर्मयोगी। कर्मयोगी अर्थात् हर कर्म द्वारा बाप से स्नेह और सम्बन्ध का हर आत्मा को साक्षात्कार हो। जैसे हृद की आत्माओं से स्नेह रखने वाली आत्मा के चेहरे और चलन से दिखाई देता है कि यह कोई के स्नेह में लवलीन है। ऐसे हर कर्म बाप के साथ स्नेही आत्मा का अनुभव कराये तब कहेंगे कमयोगी।
- 11) कर्मयोगी वा सहज राजयोगी का हर संकल्प बाप के स्नेह के वायब्रेशन फैलाने वाला होगा, जैसे जड़ चित्र शान्ति के अल्पकाल के सुख के वायब्रेशन अब तक भी आत्माओं को देने का कार्य कर रहे हैं, ऐसे आप चैतन्य रूप में संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा, कर्म द्वारा विश्व में सदा सुख-शान्ति बाप के स्नेह के वायब्रेशन फैलाने का कर्तव्य करो, यही है कर्मयोगी स्टेज।
- 12) जैसे साइन्स का यंत्र गर्मी या सर्दी का वायुमण्डल बना देता है, ऐसे आप मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें अपने साइलेन्स अर्थात् याद की शक्ति से, अपने लगन की स्थिति द्वारा जो भी वायुमण्डल या वायब्रेशन फैलाना चाहो वह फैला सकते हो। इसके लिए प्रैक्टिस करो, अपने निजी स्वधर्म में स्थित हो सुख, शान्ति व शक्ति का वायुमण्डल बना दो। उस वायुमण्डल में जो भी आत्मा आये वह महसूस करे कि यहाँ बहुत सुख, शान्ति व शक्ति प्राप्त हो रही है।
- 13) आप सबको अपनी प्राप्ति के आधार से, याद के आधार से अनुभवी बनकर दूसरों को अनुभव कराना यही है वास्तविक सहज राजयोग या कर्मयोग की परिभाषा। स्वयं प्रति शान्ति का या शक्ति का अनुभव किया, यह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन अपने याद की शक्ति द्वारा अब विश्व में वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाओ तब कहेंगे नम्बरवन सहज राजयोगी, कर्मयोगी।
- 14) कर्म करते हुए बार-बार अटेंशन दो कि बाप की याद और सेवा में तत्पर हैं ! सदा यह याद रखो कि हर कर्मेन्द्रियों द्वारा बाप की याद की स्मृति दिलाने की सेवा करनी है। हर संकल्प द्वारा विश्व कल्याण का अर्थात् लाइट हाउस का कर्तव्य करना है। हर सेकेण्ड की पावरफुल वृत्ति द्वारा चारों ओर पावरफुल वायब्रेशन फैलाना है, हर कर्म द्वारा हर आत्मा को कर्मयोगी भव का वरदान देना है। हर कदम में स्वयं प्रति पदमों की कमाई जमा करना है। संकल्प, समय, वृत्ति और कर्म चारों को सेवा प्रति लगाना, यही है कर्मयोगी स्टेज।
- 15) कर्मयोगी का हर कर्म चरित्र के समान गायन योग्य होता है। हर कर्म की महिमा कीर्तन करने योग्य होती है। जैसे भक्त लोग कीर्तन में वर्णन करते हैं कि इनका देखना अलौकिक, चलना अलौकिक, हर कार्य इन्द्रियों की महिमा अपरमपार करते रहते हैं, ऐसे हर कर्म महान अर्थात् महिमा योग्य हो। हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करने से कभी भी कोई कर्म विकर्म नहीं हो सकता, सदा सुकर्म होता है।
- 16) कर्मयोगी आत्मा सदा साक्षी दृष्टा बन कर्म करने के कारण किसी भी कर्म के बन्धन में कर्मबन्धनी

आत्मा नहीं बन सकती। कर्म का फल श्रेष्ठ होने के कारण कर्म सम्बन्ध में आते हैं, बन्धन में नहीं। सदा कर्म करते हुए भी न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करते हैं। ऐसी न्यारी और प्यारी आत्मायें अभी भी अनेक आत्माओं के सामने दृष्टान्त अर्थात् एक्जैम्पुल बनती हैं उन्हें देखकर अनेक आत्मायें स्वतः कर्मयोगी बन जाती हैं।

- 17) जैसे साकार में कहीं भी आने जाने की सहज प्रैक्टिस हो गई है। ऐसे ही आत्मा को अपनी कर्मातीत अवस्था में रहने की भी प्रैक्टिस हो। अभी-अभी कर्मयोगी बन कर्म में आये, कर्म समाप्त हुआ फिर कर्मातीत अवस्था में चले गये। निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बने फिर कर्मातीत। इसके लिए स्वयं को ट्रस्टी समझ डबल लाइट रहो। जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है, वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाए।
- 18) लास्ट आते भी फास्ट जाने का सहज साधन है – सदा कर्मयोगी बनकर रहना। कर्म भी करो और याद में भी रहो, कर्म में इतना बिजी न हो जाओ जो अपना ओरीज़ल स्वरूप भी विस्मृति में आ जाए। अपनी आत्मिक स्थिति में रहकर, शरीर का आधार लो, कर्मेन्द्रियों से कर्म कराया, कर्म पूरा हुआ न्यारे हो गये, यही कर्मयोगी की स्टेज सहज कर्मातीत बना देगी। जब चाहें कर्म में आयें और जब चाहें न्यारे हो जायें।
- 19) जैसे शरीर और आत्मा दोनों कम्बाइन्ड होकर कर्म करते हैं, ऐसे कर्म और योग दोनों कम्बाइन्ड रहें। कर्म करते याद न भूले और याद में रहते कर्म न भूले। आपका टाइटल है कर्मयोगी। कर्म करते याद में रहने वाले सदा न्यारे और प्यारे होंगे, हल्के होंगे, किसी भी कर्म में बोझ अनुभव नहीं करेंगे। कर्मयोगी को ही दूसरे शब्दों में कमल पुष्प कहा जाता है। उनके ऊपर कभी किसी भी प्रकार का कीचड़ अर्थात् माया का वायब्रेशन टच नहीं कर सकता।
- 20) फरिश्तों की दुनिया में रहकर इस साकार दुनिया में कर्म करने के लिए आओ। कर्म किया, कर्मयोगी बने फिर फरिश्ते बन जाओ। यही अभ्यास करते रहो। सदा यही स्मृति रहे कि मैं फरिश्तों की दुनिया में रहने वाला अव्यक्त फरिश्ता, फर्श निवासी नहीं, अर्श निवासी हूँ। फरिश्ता अर्थात् इस विकारी दुनिया, अर्थात् विकारी दृष्टि वा वृत्ति से परे रहने वाले।
- 21) जैसे बाप न्यारा होते हुए प्रवेश कर कार्य के लिए आते हैं, ऐसे फरिश्ता आत्मायें भी कर्मबन्धन के हिसाब से नहीं लेकिन सेवा के बन्धन से शरीर में प्रवेश हो कर्म करते और जब चाहे तब न्यारे हो जाते। यह ब्राह्मण जीवन कर्मबन्धन का जीवन नहीं, कर्मयोगी जीवन है। तो मालिक बन कर्म करो, कर्म पूरा हुआ तो न्यारे फरिश्ता बन जाओ।
- 22) अभी हर कर्म खुशियों में नाचते गाते हुए करो। जैसे स्थूल डांस में सारे शरीर की ड्रिल हो जाती है। भिन्न-भिन्न पोज़ से डांस करते हैं। ऐसे खुशी के डांस में भिन्न-भिन्न कर्मों के पोज़ करो। कभी हाथ से कोई कर्म करते, कभी पांव से... तो यह काम नहीं करते हो लेकिन भिन्न-भिन्न डांस के पोज़ करते हो। तो कर्मयोगी बनना अर्थात् भिन्न-भिन्न प्रकार की खुशी में नाचना।
- 23) कर्मयोगी बन कर्म का पार्ट बजाना है लेकिन जब फुर्सत मिले तो सूक्ष्मवतन व मूलवतन में चले जाओ। जैसे कार्य से फुर्सत मिलने के बाद घर में चले जाते हो ना। दफ्तर का काम पूरा हुआ, घर में चले गये। ऐसे स्मृति रहे कि मेरा परमधाम घर अभी सामने खड़ा है। अभी-अभी यहाँ, अभी-अभी वहाँ। साकारी वतन के कमरे से निकल मूलवतन के कमरे में चले गये।
- 24) कोई भी कार्य करते बाप की याद में लवलीन रहो। कर्मयोगी अर्थात् याद में रहते हुए कर्म करने वाला, वह सदा कर्मबन्धन मुक्त रहता है। उसे अनुभव होता कि कर्म नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल

कर रहे हैं। उन्हें किसी भी प्रकार का बोझ वा थकावट महसूस नहीं होगी। कर्मयोगी अर्थात् कर्म को खेल की रीति से न्यारे होकर करने वाले। वह कर्मेन्द्रियों द्वारा कार्य करते बाप के प्यार में लवलीन रहने के कारण बन्धनमुक्त बन जाते हैं।

- 25) कर्मयोगी कभी अच्छे वा बुरे कर्म करने वाले व्यक्ति के प्रभाव में नहीं आते। ऐसा नहीं कि कोई अच्छा कर्म करने वाला कनेक्शन में आये तो उसकी खुशी में आ जाओ और कोई अच्छा कर्म न करने वाला सम्बन्ध में आये तो गुस्से में आ जाओ या उसके प्रति ईर्ष्या वा घृणा पैदा हो। यह भी कर्मबन्धन है। कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाए, वह स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा, इसका यह पार्ट चल रहा है, इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी हो देखो, तब कहेंगे कर्मबन्धन से न्यारे कर्मयोगी।
- 26) ब्राह्मण आत्मा अर्थात् हर कर्म में बापदादा को प्रत्यक्ष करने वाली। कर्म की कलम से हर आत्मा के दिल पर, बुद्धि पर, बाप का चित्र वा स्वरूप खींचने वाले रूहानी चित्रकार हो। अभी ब्रह्मा बाप की आप बच्चों के प्रति यही एक आशा है कि हर बच्चा अपने कर्मों के दर्पण द्वारा बाप का साक्षात्कार कराये अर्थात् हर कदम में फालो फादर कर बाप समान अव्यक्त फरिश्ता बन कर्मयोगी का पार्ट बजाये।
- 27) सदा दिल में बाप ही समाया हुआ है इसलिए अच्छे तीव्र पुरुषार्थ में चल रहे हो। कर्मयोगी आत्मा हो ना। कर्म और योग कम्बाइन्ड है ना। सदा बैलेन्स रख, बाप की ब्लैसिंग को लेने वाले और सदा ब्लिसफुल जीवन में रहने वाले। ऐसी श्रेष्ठ आत्मा हो। बाप सदा हर बच्चे प्रति यही शुभ आश रखते कि यह विजय माला का मणका बनें, इसके लिए कम्बाइन्ड स्वरूप से सेवा करो।
- 28) भल यह पुराना शरीर है लेकिन बलिहारी इस अन्तिम शरीर की है जो श्रेष्ठ आत्मा इसके आधार से अलौकिक अनुभव करती है। तो आत्मा और शरीर कम्बाइन्ड है। पुराने शरीर के भान में नहीं आना है लेकिन मालिक बन इस द्वारा कार्य कराने हैं, इसलिए आत्म-अभिमानि बन कर्मयोगी बन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराते चलो। कर्तापन के भान से, मैं करता हूँ, मैंने किया... यह मैं पन से मुक्त रह कर्म करना ही कर्मयोगी स्टेज है।
- 29) कर्मयोगी का पार्ट बजाते कर्म और योग का बैलेन्स चेक करना कि कर्म और याद अर्थात् योग दोनों ही शक्तिशाली रहे? अगर कर्म शक्तिशाली रहा और याद कम रही तो बैलेन्स नहीं और याद शक्तिशाली रही, कर्म शक्तिशाली नहीं तो भी बैलेन्स नहीं। तो कर्म और याद का बैलेन्स रखते रहना। सारा दिन इसी श्रेष्ठ स्थिति में रहने से कर्मातीत अवस्था के नजदीक आने का अनुभव करेंगे। सारा दिन, चलते फिरते खाते-पीते कर्मातीत स्थिति वा अव्यक्त फरिश्ते स्वरूप की स्थिति में रहना, यही कर्मयोगी स्टेज है।
- 30) जैसे शारीरिक व्याधि कर्म भोग अपनी तरफ बार-बार खींचता है, दर्द होता है तो खींचता है ना। तो कहते हो क्या करें, वैसे तो ठीक है लेकिन कर्मभोग कड़ा है। ऐसे कोई भी विशेष पुराना संस्कार वा स्वभाव वा आदत अपने तरफ खींचती है तो वह भी कर्म भोग हो गया। कोई भी कर्मभोग, कर्मयोगी नहीं बना सकेगा, इसलिए बार-बार अशरीरी पन की ड्रिल करते शरीर के भान को छोड़ते जाओ।